ॐ पिताश्री 23/4/63

रिकॉर्ड :–.....नाटकों... स्त्री–पुरुष के लव का। लव तो स्त्री का पति के ..... है ही है। इन पर बहुत गीत बनाते हैं। यहाँ तो बात ही बिल्कुल न्यारी है, जो सिर्फ बच्चे ही जानते ..... है और किसके साथ लव है। हम जब कहा जाता है तो यह शरीर ..... पड़ता है। जो ज्ञानी (तू) आत्मा बच्चे हैं वो जानते हैं। हम ..... के लिए नहीं कहा जाता। हम (आत्मा) फिर कहाँ जाती हैं? (मेरा) शरीर। मेरा–2 तो ..... ही ..... आत्मा है। मुझे इस समय में बाप को याद करना है। (शरीर) .... से छूट जाता है। इसको ही कहा जाता है देही–अभिमानी। फिर देही–अभिमानी को इन–ऑरगन्स द्वारा, देही का जो बाप है, उनकी मत पर चलना है। अर्थात् श्रीमत पर चलना है। अब श्रीमत किसकी है? श्रेष्ठ तो है निराकार परमपिता प०। इस बात का ही दुनिया में रोला है। उन्होंने श्रीमत कृष्ण की रख दी है; परन्तु वो तो हो न सके। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ सभी गॉड फादर को ही कहते हैं, कृष्ण को नहीं कहेंगे। गॉड फादर इनकारपोरियल को कहा जावेगा। तुम बच्चे जानते हो, हमको दो बाप (आ)कर मिले हैं। वो जो श्रीमत देते हैं, उस पर पूरा चलना है। अब श्रीमत हो जाती है .....; क्योंकि बाप दादा (इ)कट्ठे हैं ना। बच्चों को पता नहीं पड़ता है कि यह मत कौन देते हैं। बच्चे समझते हैं कि इसमें बाप सदैव तो नहीं बैठा होगा, बैल पर सवारी सदैव तो नहीं होगी, तो ज़रूर ब्रह्मा (की) मत होगी। फिर भी ब्रह्मा की मत गाई हुई है ना, कृष्ण की नहीं, न शिव की मत गाई हुई (है)। ब्रह्मा ..... की मत गाई हुई है। ब्रह्मा का नाम बाला है; क्योंकि प्रजापिता है ना! तो ..... बच्चों को मत मिलती है। अब श्रीमत का ..... है। श्रीमत भगवत गीता में जो श्रीमत ..... यह भी पता निकालना पड़े ना ..... ब्रह्मा की वा शिव की? अभी ब्रह्मा तो है शिव का बच्चा। ब्र०वि०शं० तीनों उस शिव के बच्चे .....। ब्रह्मा को आदिदेव कहते हैं। कृष्ण को आदिदेव नहीं कहेंगे। अगर कृष्ण को कहें तो फिर आदिदेव कह .... राधे का नाम तो आता नहीं। यह प्वाइंट्स समझाई हुई हैं; परन्तु बच्चों को विस्मृति हो जाती है; इसलिए फिर समझाया जाता है। रिफ्रेश कराते हैं। बाबा जानते हैं, बच्चे बहुत प्वाइंट्स भूल जाते हैं। तो जगदम्बा और जगतपिता दोनों ही बहुत नामी–ग्रामी हैं। प्रजापिता, उनका नाम है .....। अब ब्रह्मा जब कहा जाता है तो बुद्धि चली जाती सूक्ष्मवतन में। अब प्रश्न उठता है .... श्रीमत किसको कहे? वो (ब्रह्मा) है आकारी, कृष्ण है साकारी। तो मनुष्य कहेंगे, आकारी (ब्रह्मा) कैसे मत देंगे? ज़रूर मत तो साकार ही देंगे; इसलिए कृष्ण ही होना चाहिए और वो है भी स्वर्ग का प्रिन्स। ब्रह्मा तो है सूक्ष्मवतन में। (भल) ब्रह्मा का चित्र भी (बना)ते हैं; क्योंकि सूक्ष्म का तो कुछ बनाए न सके; इसलिए स्थूल ब(नाय) रखा है। कहेंगे, ब्रह्मा तो (सूक्ष्म)वतन वासी है, तो भला ब्रह्मा की मत कैसे मिले! ज़रूर उनको स्थूल में आना पड़े। और तो युक्ति नहीं जो स्थूल में लावे। यह तो कोई कह न सके कि सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा यहाँ आ सकता। (उनको) भी फिर जन्म देने वाला कोई चाहिए। प्रजापिता ब्रह्मा की माँ चाहिए। जो भी मनुष्य हैं उनको ..... ज़रूर चाहिए, नहीं तो पैदा कैसे हो! कृष्ण के माँ–बाप भी तो मशहूर है; इसलिए ब्रह्मा को ..... यह ब्रह्मा है साधारण मनुष्य, जिसमें मैं आता हूँ। दुनिया नहीं जानती। इस गुचवण को ..... समझाते हैं। वण्डर भी खाते हैं ना! कहते हैं– इनको ब्रह्मा किसने बनाया? कोई तो अथॉरिटी ..... दिया। ऐसे तो बहुत ..... रखते रहते हैं। तो इस बात पर समझाते ..... पड़ना चाहिए कि भगवान ही समझा सकते हैं। ब्रह्मा (है) भगवान का बच्चा। ..... बैठ समझाते हैं कि यह ..... कैसे हो? मैं कैसे इनको जन्म देता हूँ? ब्र०वि०शं० को ..... कौन देते हैं? यह कोई भी नहीं जानते हैं। कृष्ण का जन्म तो माँ–बाप से दिखाते हैं। इन

ब्र०वि०शं० की रचना कैसे होती है, यह कोई भी नहीं जानते हैं। सूक्ष्म का तो माँ–बाप भी सूक्ष्म ..... दूसरा तो कोई है नहीं जो यह सुना सके। कितनी गुह्य बातें हैं! ब्र०वि०शं० का रचयिता तो ज़रूर ..... होगा। एक ही प० है जो ब्र०वि०शं० द्वारा कर्म करवाते हैं। तो ज़रूर रचना भी उसने रची होगी ना! बाप तो ज़(रूर) चाहिए। वो ही आकर समझावेंगे ना! तो वो आकर इन द्वारा समझाते हैं। ब्र०वि०शं० द्वारा स्थापना–विनाश–पालना कराने वाला ज़रूर उनसे ऊँच होगा ना! कृष्ण तो हो न सके। वो कृष्ण तो हुआ मनुष्य। वो (ब्र०वि०शं०) हुए देवताएँ। तो उनसे भी ऊपर में जाओ, तो मूल है। स्थूल–सूक्ष्म–मूल गाया जाता है ना! मूल परमधाम को कहा जाता है। वो है मूलवतन, वो सूक्ष्मवतन। मूलवतन में कौन रहता, सूक्ष्मवतन में कौन रहता है– यह है बड़ी सिम्पल बात; परन्तु तुम्हारे लिए। तो अपन को सिद्ध करना है श्रीमत किसकी है। कृष्ण की तो हम कह न सके। उनसे तो सूक्ष्मवतन वासी देवताएँ ऊँच हैं। ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि पैदा हुई, कृष्ण द्वारा थोड़े ही कहेंगे। ब्रह्मा ही ऊँच गाया हुआ है। कृष्ण तो मनुष्य हो गया। वो है सूक्ष्मवतन वासी। प० है मूलवतन वासी। उनको ही गॉड फादर कह याद करते हैं। सिर्फ फादर नहीं कहेंगे, परमपिता अक्षर (ज़रूर) आता है। लौकिक बाप अथवा डाडे को परमपिता नहीं कहा जाता। परमपिता यह टाइटल तो बहुत ऊँच है। आत्मा कहती है– परमपिता प०, हमको इस दुख से छुड़ाओ। हमारी यह आश पूरी करो। अभी ऊँच ते ऊँच तो है परमात्मा। वो लोग फिर आशा जाकर सुनाते हैं रचना को। ब्र०वि०शं० अथवा कृष्ण आदि–2 को कहेंगे– हमको पुत्र चाहिए, धन चाहिए। ऐसे तो कोई नहीं कहते, हमको स्वर्ग की राजाई चाहिए वा जीवनमुक्ति चाहिए। यह कोई माँगता ही नहीं। कृष्ण के पास जाकर ऐसे भी नहीं कहेंगे कि हमको राजाओं का राजा बनाओ। गीता में ही भगवान ने कहा है कि मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। देखो, यह सभी विचार–सागर–मंथन की बात है। कृष्ण के मंदिर में जाते हैं; परन्तु ऐसे नहीं कहते हैं कि आपने तो राज्य योग सिखलाए राजाओं का राजा बनाया था। गीता में ..... हुआ है– मैं तुमको नर से ना० बनाता हूँ। अभी हमको कितना वंडर लगता है। कृष्ण ही श्री ना० बनते हैं। हमने पूजा तो बहुत की है ना; परन्तु गीता में है ही कृष्ण भगवानुवाच्य। वो तो राजयोग सिखलाने आया, कहा– मैं राजाओं का राजा बनाता हूँ; परन्तु ऐसे कब कोई नहीं कहते, हमको राजाओं का राजा बनाओ। हम(ने बहुत) भक्ति की है। यह बातें किसकी बुद्धि में नहीं आतीं, जो कृष्ण को कहें– आप जब आए थे तो राजाओं का राजा बनाया था। अभी तो वो नहीं है ना! कृष्ण भगवान होकर गए हैं; परन्तु कृष्ण को द्वापर में ले जाने से उनको श्री ना० समझ न सकते। अगर कृष्ण ही भगवान होता तो फिर उनसे क्यों नहीं यह कहते कि हमको राजाओं का राजा बनाओ, आपने राजयोग सिखलाया था। (जो) चीज़ उसने दी वो ही फिर उनसे माँगनी चाहिए ना! मनुष्य से देवता बनने की तरकीब बताओ। वो तो सिर्फ माँगते हैं– पुत्र दियो, धन दियो। स्वर्ग की राजाई हम क्यों (नहीं) माँगते थे। अभी वण्डर लगता है ना! कृष्ण से माँग ही कैसे सके जबकि वो भगवान तो है (न)हीं। अच्छा, वो कब आया था, यह भी पता कैसे पड़े। वो तो फिर प्रेरणा अक्ष(र) कहते हैं। प्रेरणा से मनोकामना पूरी करते हैं। तो भला क्यों नहीं प्रेरणा से वो राजाओं का राजा बना.... देते! अगर प्रेरणा से कराते हैं तो। अच्छा, शिवबाबा है तो उनसे क्यों न माँगते हो! हम आपके पास पहुँच ..... ऐसे तो कोई कहते नहीं। न शिव को कहते, न कृष्ण को कहते। वो तो समझते हैं, गीता का भगवान कृष्ण है। हम..... शिव है। दो बातें हैं। कृष्ण का नाम दे, शिव का नाम गुम कर दिया है। अब कृष्ण का नाम तो ..... . उनसे कुछ भी मिल न सकता। भक्तिमार्ग में रोले बहुत हैं। तो अभी बाप मत देते हैं। ..... शास्त्र पढ़े हुए हो; परन्तु अभी, जबकि भगवानुवाच्य बच्चों प्रति है तो वो बाप ठहरा। बाप हो गया स्वर्ग की स्थापना करने वाला। तो हम अगर बाप को और स्वर्ग को याद करे तो स्वर्ग की राजाई

(क्यों नहीं) मिलेगी! लौकिक संबंध में भी बाप से वर्सा मिलता है ना! उनकी कोई पूजा तो नहीं करते। हम भी उनकी पूजा नहीं करते। उनसे तो डायरैक्ट वर्सा मिलता है। कहते हैं, सर्वधर्मान्..... मामेकम् याद करो तो पाप दगत(दग्ध) होंगे, फिर विकर्माजीत बन जावेंगे। हमारा वो बाप कितना मोस्ट बिलवेड, कितना मीठा, कितना प्यारा है! हम जानते हैं, बाबा स्वर्ग की स्थापना करने वाला है। बाबा कितनी सहज बात कहते हैं, सिर्फ (मुझे) याद करो। फिर इतने शास्त्र पढ़ना, यज्ञ–तप आदि करने की क्या दरकार है! जबकि बाप कहते हैं– (मैं) शास्त्र पढ़ने अथवा यज्ञ–जप–तप आदि करने से, न मेरे को कोई मिलते, न वर्सा पाए सकते हैं। तुम श्रीमत पर चलो। मैं आया हूँ स्वर्ग की स्थापना करने। गाया भी जाता है– तुम मात–पिता... हम .....नते हैं। हमको उस बाप ने एडॉप्ट किया है। उनको याद करने से बरोबर हम राजाओं का राजा जाकर बनेंगे। सखा भी वो बनेंगे, जो पूरा इम्तहान पास करेंगे। तो वो बाप है स्वर्ग का मालिक। राज्य योग है ही राजाओं का राजा बनाने वाला। तो जबकि ऐसे बाप की श्रीमत से स्वर्ग की राजाई मिलती है, तो फिर और–2 को याद करने की क्या दरकार है! उनका तो फरमान है, मुझे याद करो; क्योंकि तुमको मेरे पास आना है। समझाते हैं– अन्तकाल जो..... कहते त्रिलोचन (तीसरा नेत्र देने वाला), मुझे (याद) करो तो नारायण पद पाओगे। राज्य योग है ना! मेरे से ही तुम ना० पद पावेंगे। मोस्ट इज़ी है, फिर भी ऐसे बाप को भूलना थोड़े ही चाहिए। याद ठहर नहीं सकती है; जै(से) एक पारा है। अभी–2 याद करो, फिर भूल जाता। यह बाबा अपना अनुभव बतलाते हैं– घड़ी–2 भूल जाता हूँ। पुरुषार्थ का अनुभव बतलाया जाता है ना! तो बाबा भी कहेगा, बच्चा कितनी मेहनत करते हैं, मुझे याद करने लिए। बच्चियों को कहता हूँ, मुझे याद दिलाओ, तो याद दिलाती हैं; परन्तु याद तो सारा टाइम चाहिए। ..... ग्रह(घड़ी)–2 पर वाहगुरु कहा जाता है ना! ग्रह(घड़ी)–2 पर शिवबाबा को याद करने से बहुत कल्याण होगा। ..... मीठा बाबा है। चाहते हुए भी फिर भूल जाता हूँ। कहता हूँ– बाबा, भूल क्यों जाता हूँ? बाबा क(हते) हैं– मासी का घर थोड़े ही है याद करना। अगर ग्रह(घड़ी)–2 पर तुम शिवबाबा को याद करते रहो, फिर तो विनाश हो जाय। फिर बच्चे कहाँ जावेंगे! तुम तो हो इंजन। तुमको तो सभी गाड़ी को भी खैंचना है। गाड़ी को छोड़ अकेली (इंजन) थोड़े ही भागेगी! देखो, यह सभी बाबा के साथ बातें चलती हैं। बाबा कहते हैं– श्वासों श्वास याद करके तो दिखाओ, बाबा नहीं घड़ी–2 भूल जाता है। यह तो गपोड़े लगाते हैं कि हम बहुत याद करते हैं। यह बाबा ..... मुरब्बी ब(च्चा) है। कहते हैं– मैं घड़ी–2 भूल जाता हूँ। अजब खाता हूँ, भूलता क्यों हूँ! .... से बोलता था .... हूँ। अकेला बैठा हूँ, फिर भी बुद्धि इधर–उधर चली जाती है। मेहनत सारी इसमें है। बीज और झाड़ को याद करना तो बहुत सिम्पल है। योग में माया खलल डालती है, नॉलेज में खलल नहीं (डाल)ती। यह बाबा सभी युक्तियाँ बतलाते हैं बच्चों को। कोई भी आवे, बोलो– बैठो! राज़ी–खुशी हो? शास्त्र आदि कितने पढ़े हो? विद्युत मंडली में गए हो? श्री–श्री का टाइटल भी लिया है? परन्तु बात ..... वाली बड़ी रमणीक चाहिए। इसमें भी प्रैक्टिस चाहिए। मम्मा को प्रैक्टिस पड़ गई है। फिर भी विचार–(सागर)–मंथन की प्रैक्टिस तो बाप के लिए ही गाई हुई है। शिवबाबा तो विचार–सागर–मंथन नहीं करेंगे। बाबा कितना विचार–सागर–मंथन करते हैं। ओना है बच्चों को फॉलो कैसे करावें। तुम बच्चे तो अथॉरिटी हो ..... बाबा को याद कर तुम सर्विस करेंगे तो बाबा भी आकर मदद करेंगे। इसमें तो बाप और बच्चा ..... है ना! यह बाबा कितना याद करते हैं, फिर भी माया कितनी दुस्तर है, याद करने न देती। मैं .... चाहता हूँ– श्वासों श्वास याद करें; परन्तु फिर बुद्धि और तरफ चली जाती है। यथार्थ योग ..... यह है, जि(स)से विकर्म विनाश होते हैं। मोस्ट बिलवेड बाप को याद तो करना चाहिए ना! माया साथ ..... सूक्ष्म लड़ाई है। वण्डर लगता है, बुद्धियोग बाहर जाता ही क्यों है, जबकि चाहता हूँ– मोस्ट ... बिलवेड बाबा की याद में रह भोजन खाता हूँ। बाबा आप खिलाने वाले हो। आप वासना लेना।

तो सारा समय याद करेंगे तभी तो वो वासना लेंगे ना! ऐसे थोड़े ही, एक गिट्टी की वासना वो लेवे, बाकी मैं खा जाऊँ। देखो, यह सभी खयालात चलती है। दूध पीता है, तो भी याद करता हूँ। जितना समय पीऊँ उतना समय याद कर(ता); परन्तु फिर भूल जाता हूँ। यह पुरुषार्थ का अनुभव बतलाने से ही तो फायदा होता है ना! मोस्ट बिलवेड बाप को याद करना है। सेकण्ड ब सेकण्ड, ग्रह(घड़ी)–2 पर उनको वासना मिलनी चाहिए कि मैं बहुत खाऊँ और उनको वासना थोड़ी मिले। बाबा का जो पुरुषार्थ चलता है वो बतलाते हैं दिन को भल सोता हूँ; परन्तु अन्दर जागता रहता हूँ। मेहनत चलती रहती है। फिर भी बुद्धि कहाँ–2 चली जाती है। माया, तुम हमारी बुद्धियोग तोड़ देती हो, फालतू बातों में ले जाती हो। तो समझता हूँ इसमें बड़ी मेहनत चाहिए। यह है सूक्ष्म माया का तूफान। वो क्रोध आदि करना, वो तो अलग है। यह भी प्रैक्टिस चलती है, सभी से मीठा चले। भल कोई भूल करते हैं, तो भी प्यार से समझाते हैं। बाबा समझते हैं, कितनी मेहनत करनी पड़ती है। पहले नम्बर वाले को ही इतनी तकलीफ होती है, तो पिछाड़ी वाला को कितना भटकाती होगी! इसमें बड़ा अच्छा पुरुषार्थ चाहिए। 21 जन्मों का राज्य लेना कोई कम बात नहीं है! इसमें हाथ–पाँव तो नहीं चलाने हैं, सारा बुद्धि का काम है। बुद्धि ही धारण करती, याद करती है। आत्मा अपने बाप को याद करती है। ज्ञान कोई कठिन नहीं है, बुद्धियोग लगाना बड़ा कठिन है। जिनका योग ठीक नहीं है उनके लिए ज्ञान भी कठिन हो पड़ता, (जो) धारणा नहीं होती। तो जब सन्यासी आदि आते हैं, तो बोलो– यह याद करो। सर्वधर्मान् परित्यज। मामेकम् याद करो। तो तुम पापों से मुक्त हो सो ना० बनेंगे। यह कौन कहता है? दुनिया थोड़े ही जानती, इन ल०ना० ने 21 जन्म कैसे राज्य किया। वो तो 84 जन्मों को ही नहीं जानते। ज़रूर जो सूर्यवंशी (में) जावेगा, तो पुनर्जन्म भी वहाँ ही लेंगे ना! यहाँ तो एक जन्म लिए, अल्पकाल लिए राजा–राणी बनते हैं, यह तो 21 जन्मों की बात है। कितनी अच्छी–2 बातें हैं! जिनको समझकर फिर समझाना भी है। इसमें बड़ी ..... मेहनत है। बाबा नींद थोड़े ही करते हैं। खयालात (चलता) रहता है– बच्चे, इनको कैसे समझावें, कैसे पकड़ें। सन्यासी आते हैं, बोलो– तुम शास्त्र तो बहुत पढ़े हो। ऐसे बहुत हैं, जो पानी से, आग से पार कर चले जाते हैं; परन्तु बाप पूछते हैं– यह सभी मेहनत किसके लिए करते हो? अच्छा, बहुत शास्त्र पढ़कर बड़े विद्वान बने, सरस्वती टाइटल मिला। भला इनसे फायदा क्या? तुम यह सभी शास्त्र पढ़कर क्या चाहते हो? यह तो जन्म–जन्मांतर पढ़ते आए हो। आगे जन्म में भी पढ़े थे, अभी भी पढ़े हो। फिर संस्कार ले जाओगे। आत्मा संस्कार ले जाती है; परन्तु अभी तो यह ख्याल करना है– हम बाप के पास कैसे जावे। इस दुनिया में तो बहुत दुख है। सतयुग में सुख ही सुख है। यह तो हम जानते हैं, तुम संस्कारों अनुसार सन्यासी बने हो, शास्त्र पढ़े हो; परन्तु बाप तो कहते हैं– मनमनाभव, तो विकर्म विनाश होंगे। सर्वधर्मान् परित्यज, फिर इसमें शास्त्रों की तो बात ही नहीं। भगवान ने तो कहा है– देह सहित देह के सभी संबंध का सर्वधर्मान्– मैं हिन्दू हूँ, मुसलमान हूँ, यह सब छोड़ो, मामेकम् याद करो, तो इसी योग अग्नि से विकर्म विनाश होंगे। अन्त मते सो गते, मेरे पास तुम आ जावेंगे। वहाँ जाना है तो उनको याद करना है। वो रचयिता है, राज्य योग सिखलाते हैं। तो ज़रूर भगवान होगा ना! भल हम शास्त्र पढ़े हैं; परन्तु बाबा कहते हैं– यह सभी भूल जाओ। हियर नो ईविल... सभी ईविल हैं। इनसे ही तुम बन्दर बने हो। अभी सिर्फ मुझे याद करो। बाप और वर्सा याद करो। फिर यह शास्त्र आदि क्या काम के! चेम्बूर :– देखो, आज टोली है खजूर। ऊँचे ते ऊँचा भगवान ऊँच ते ऊँच खजूर। जैसे हमारा बाबा आयरन एज्ड सोल को बदल रहे हैं, वैसे हमने भी इनमें ख...ड़ी बदल खाजू डाल दिया है। अच्छा, यह है रुद्र ज्ञान यज्ञ। रुद्र शिव ने यज्ञ रचा है ब्राह्मणों द्वारा। जो अच्छी रीत यज्ञ सर्विस करेंगे उनको इनाम तो शिवबाबा ही देने वाला है। कितना जबरदस्त है! अभी कोई इनकी सेवा में आए, बलि तो तन–मन–धन से चढ़ना है, फिर वो धन भी देते हैं, तन भी फर्स्ट क्लास देते हैं, आत्मा भी प्युअर हो जाती है, देते तो सभी हैं, सिर्फ करने वाले की कोताही है। बाबा ने तो फट से सब कुछ दे दिया ना।